

१८५
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

— श्रीगणेशाय नमः —

ASHA ARCHIVE

श्रीगणेशाय नमः

3011

१८
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

— श्रीगणेशाय नमः —

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

१०० श्री सो ४॥ जं जू न त त्वा य स्वाहा ॥ श्री विद्या त्वा य
स्वाहा ॥ सो ४ गिव त्वा य स्वाहा ॥ ॥ श्री यं यं यं ताम्
य रुट् ॥ दि ग्व श्री ॥ जं जियू ना य वी विप्र द् श्री यी
० कामि नी यनी श्री म श्री सो ४ न न ४ क्रि त्त द् वा द य

त ॥ जं वं गायत्री स्मृ त्वा ॥ ॥ या ना याम् ॥ श्री श्री श्री
या ना याम न व धा ॥ ॥ जस्य श्री विद्या म रुट् ॥ श्री श्री श्री
म रुट् यान द् रुट् व र्ज श्री मि रुट् यु रुट् ४ श्री विप्र न त्
दनी य ना य व ना श्री विजं श्री गं श्री ४ श्री की ल के
सर्व सो रा ग्य व ग्य ॥ ज न ज त्वा श्री या य यं विजिया

कयप्रहमम॥ नमः कमलवासिने स्वाहा ॥ जय १० ॥ मधुना कयप्रह
म॥ जेडीकी ॥ जय १२ ॥ यप्रानलहामसुथा ॥ ॥ मूथयुवनमूर्या ॥ की
॥ जय ३२ ॥ विवाययूकासुदयसाम॥ ॥ मूथडीकी ॥ जय २४ ॥ कीनयूक
॥ वासिदेवकी ॥ दयतादिरिहाम॥ ॥ मूथविताया ॥ ॥ डुकी ॥ दूदव
क ॥ मूथकी ॥ डुकी ॥ जय १० ॥ मधुना कयप्रहमसुथा ॥ ॥ मूथयुवन
॥ कय ॥ ॥ डुकी ॥ जय ३॥ मूथनदगसिहाम॥ कयकी ॥ जययूतम

दगसिहाम॥ ॥ मूथनित्यकिनामा ॥ डुकी ॥ नित्यकिनामयउववाहा
जय २४ ॥ ॥ मूथनित्यकिनामा ॥ डुकी ॥ जय १२ ॥ हामसहमम ॥ समि
॥ ॥ मूथनित्यकिनामा ॥ मूथडीकी ॥ जय ३॥ मूथ
हामसुथा ॥ ॥ मूथनित्यकिनामा ॥ डुकी ॥ नित्यकिनामयउववाहा
॥ जययूतम ॥ ॥ मूथनित्यकिनामा ॥ डुकी ॥ नित्यकिनामयउववाहा
॥ जय २॥ ॥ मूथनित्यकिनामा ॥ डुकी ॥ नित्यकिनामयउववाहा
जय २॥ ॥ मूथनित्यकिनामा ॥ डुकी ॥ नित्यकिनामयउववाहा
॥ जय ३॥ ॥ मूथनित्यकिनामा ॥ डुकी ॥ नित्यकिनामयउववाहा

[illegible][illegible]



ASHA ARCHIVES



3011

ASHA ARCHIVES

Handwritten text in Devanagari script, likely a title or description of the manuscript, written in black ink on the aged, stained paper.

वज्रवैराचनीय दूँ दूँ रुद्र स्वाहा ॥ वज्रवैराचनीय दूँ दूँ रुद्र स्वाहा ॥ १ ॥
॥ ॥ उच्छिष्टवा अल्ल्या ॥ ॥ उच्छिष्टवा अल्ल्या ॥ ॥ उच्छिष्टवा अल्ल्या ॥ ॥
मिच्छिष्टवा अल्ल्या ॥ ॥ मिच्छिष्टवा अल्ल्या ॥ ॥ मिच्छिष्टवा अल्ल्या ॥ ॥
महाकाली किलिकिलि स्वाहा ॥ ॥ मूथनील सनमूया ॥ ॥ दीधी दूँ
दूँ ॥ ॥ उयताया ॥ ॥ दीधी दूँ ॥ ॥ एकजया ॥ ॥ दीधी दूँ
दूँ ॥ जय ॥ ॥ भादशां हाम ॥ ॥ मूथकाल्या ॥ ॥ मूथकाल्या ॥ ॥
दूँ स्वाहा ॥ कालिकालिक दूँ ॥ जय दग सहस्र ॥ १० ॥ ॥ मूथदकि

लकाल्या ॥ ॥ दीधी दूँ दूँ दीधी दूँ ॥ ॥ कालिक दूँ दूँ दीधी दूँ
स्वाहा ॥ ॥ मूथवल्वा ॥ ॥ न ॥ ॥ मूथशीसकान्त एमवालस्य ॥
दवकीसूत एमविन्द वासुदवज गत्यत ॥ दहिमतनय दवत्वामहं
भनलंगत ॥ जय ॥ १ ॥ ॥ निसिद्धमरु ॥
धिरु प्रवृषस्य विप्रद सहस्राकृत्य महादवस्य धीमहितना नृदपुत्राद
यात वमूवतु मूत्रा नवा मन्वा मन्वा दे मन्वा दे मन्वा दे मन्वा दे मन्वा दे
मूत्रक नक य महापातु पातामय मी पञ्चदू रुद्र ॥ वज्रिण ॥ ॥ निरु